BA 1st year

सैन्य विज्ञान की परिभाषा एवं क्षेत्र :-

सैन्य विज्ञान, सेना तथा विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है तथा अंग्रेजी के मिलिट्री साइन्स (Military Science) शब्दों का पर्यायवाची है। इस विषय की परिभाषा को भली भाँति समझने के लिए सैन्य तथा विज्ञान शब्दों का अर्थ समझ लेना आवश्यक होगा। सैन्य शब्द का अर्थ मुख्य तौर से सेना सम्बन्धी समस्त विषयों से है। सेना का संगठन, युद्ध लड़ने के उद्देश्य से होता है। सेना से मतलब हथियारों से युक्त मनुष्य वर्ग से ही नहीं वरन् उनके सैन्य संगठन, साधन, विकास तथा युद्ध कला आदि सभी से है।

यह प्रकृति का नियम है कि अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए प्रयत्न किया जाय और वास्तव में वही अपना अस्तित्व बनाये रख सकता है जो सबल हो। वास्तव में संसार में जब से मनुष्य की उत्पत्ति हुई है तभी से युद्ध भी होते रहे हैं। युद्ध का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानव जाति का।

प्रारम्भ में मानव ने अपनी पेट की ज्वाला को शांत करने के लिए जंगली जानवरों के साथ संघर्ष किया। बाद में शिकारियों द्वारा प्राप्त वस्तुओं के बँटवारे आदि के तनावों के कारण मानव-मानव में ही लड़ाई होने लगी। पहले हथियारों का प्रयोग जंगली जानवरों का शिकार के लिए ही किया गया किन्तु बाद में इनका प्रयोग मानव-लड़ाईयों में होने लगा।

एक प्रकार से देखा जाय तो युद्ध मानव सभ्यता के विकास का मुख्य कारण है। इसके फलस्वरूप राजा और राज्य की स्थापना हुई। युद्ध ने ही अनेक आविष्कारों को जन्म दिया है। युद्ध के द्वारा ही अनेक उत्तम गुणों जैसे साहस, त्याग, कर्तव्य-परायणता तथा जीवन-बलिदान की भावनाओं आदि का विकास होता है।

रस्किन के अनुसार- राष्ट्रों का प्रशिक्षण और पोषण युद्ध में ही होता है। विश्व के इतिहास का कोई भी ऐसा समय नहीं मिलेगा जब युद्ध न हुआ हो अथवा युद्ध की तैयारी न होती रही हो। सत्य तो यह है कि मानव जाति का इतिहास ही युद्ध पूर्ण है।

Scanned by CamScanner

वास्तव में युद्ध एक सामाजिक तथ्य भी है, जो सामाजिक परिवर्तन के साथ बदलता रहता है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता रहा है, वैसे ही युद्ध के स्वरूप का विकास होता रहा है। युद्ध काल तथा युद्ध के प्रमुख शस्त्रों का भी इसी प्रकार विकास होता रहा है। युद्ध के स्वरूप के अनुसार ही सैन्य-संगठन में भी विकास हुआ है।

भारतवर्ष के इतिहास में भी युद्धों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है, प्राचीन काल से ही भारत पर विदेशी आक्रमण होते रहे हैं, भारत पर बाह्य जातियों ने अनेक बार आक्रमण किये और भारतवर्ष में रहने वाली जातियों से युद्ध किया है। सिकन्दर महान् के आक्रमण से पूर्व भी भारत पर कई आक्रमण हुए।

भारतवर्ष संसार के प्राचीनतम् महान् देशों में प्रमुख रहा है। इस देश का एक लम्बा इतिहास है। इस देश में अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक उथल-पुथल हुए हैं जिनका मुख्य कारण युद्ध रहा है, अतः इन सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक उथल-पुथल के कारण 'युद्ध' तथा 'युद्ध पद्धति' का अध्ययन हमारे लिये अत्यन्त आवश्यक है।

यहाँ एक बात और स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये कि इन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिवर्तनों का प्रभाव सैनिक-पद्धतियों पर भी पड़ा जिसके फलस्वरूप यहाँ अनेक प्रकार की सैन्य-पद्धतियों का विकास और ह्रास हुआ। अतः भारतवर्ष के सुरक्षा व्यवस्था के विकास और विभिन्न सैन्य-पद्धतियों के गुणों और दोषों का विवेचन भी हमारे लिए आवश्यक है।

परिभाषा :- सैन्य पद्धति का शाब्दिक अर्थ है, सैनिक अथवा सेना से सम्बन्धित पद्धति। चूँकि सैनिक सेनानायक प्रमुख अंग और साधन हैं इसलिये इसे सेना से सम्बन्धित पद्धति कहा जा सकता है। वैसे सैन्य विज्ञान को परिभाषा के परकोटे में घेरने का प्रयत्न बहुत दिनों से किया जा रहा है लेकिन तो भी परिभाषा का अभाव ही बना हुआ है यह इस बात का द्योतक नहीं है कि युद्ध विशारदों ने सैन्य विज्ञान पर ध्यान ही नहीं दिया। कैप्टन बी.एन. मालीवाल के शब्दों में- "सैन्य विज्ञान ज्ञान की वह शाखा है जिसमें सैनिक विचारधारा, संगठन, सामग्री और कौशल के विकास का समाज के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

Scanned by CamScanner

सैन्य विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध एवं उपयोगिता

(RELATIONSHIP OF MILITARY SCIENCE WITH OTHER SCIENCES OF UTILITY)

अध्ययन की सुगमता हेतु यह आवश्यक है कि सामाजिक जीवन की विभिन्न क्रियाओं को पृथक्-पृथक् बाँटकर स्वतन्त्र रूप से इनका अध्ययन किया जाये। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि—"मनुष्य अपने स्वभाव से ही एक सामाजिक प्राणी है।" मनुष्य न कभी समाज से अलग अकेला रहा है और न कभी रहेगा क्योंकि प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे पर आश्रित है। एक के बिना दूसरे का काम चलने वाला नहीं है। मनुष्य की प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में ही हो सकती है। इसी कारण मनुष्य का मनुष्य से अटूट सम्बन्ध स्थापित होना स्वाभाविक है। इसी सम्बन्ध को सामने रखकर मनुष्य ने जिन शास्त्रों का विकास किया है, वे मानवीय सामाजिक जीवन के विभिन्न अंगों का अध्ययन करते हैं।

इन शास्त्रों के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, सैन्य विज्ञान आदि प्रमुख हैं। मनुष्य शुरू से ही प्रकृति द्वारा प्रदान की गई वस्तुओं का उपभोग करना चाहता है और यही कारण है कि वह उन वस्तुओं का विस्तृत अध्ययन कर ज्ञान अर्जित करता है। सम्भवतः इसीलिए प्राकृतिक विज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। इस विज्ञान के अन्तर्गत रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, प्राणी विज्ञान, ज्योतिषशास्त्र तथा भूगोल आदि अनेक प्रकार के शास्त्र हैं जो प्रकृति के विशिष्ट पहलुओं को आधार मानकर उसका अध्ययन करते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक शास्त्रों में अटूट सम्बन्ध है। यदि देखा जाये तो इन सभी का प्रादुर्भाव एक ही केन्द्र से हुआ है। प्रत्येक शास्त्र अपनी उन्नति एवं विकास-हेतु दूसरे शास्त्रों पर आश्रित रहता है। यही सिद्धान्त सैन्य विज्ञान पर लागू होता है। यदि हम सैन्य विज्ञान का अन्य शास्त्रों एवं विज्ञानों से अलग-अलग सम्बन्ध स्थापित करके देखें तो बात और स्पष्ट हो जायेगी।

(1) समाजशास्त्र एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

सोशियोलाजी (समाजशास्त्र) दो शब्दों—सोशियो और लाजी को मिलाकर बना है। सोशियो का अर्थ है समाज और लॉजी का अर्थ है ज्ञान अथवा विज्ञान। इस प्रकार सोशियोलॉजी का शाब्दिक अर्थ समाज का विज्ञान है जो समाज के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इस

Scanned by CamScanner

प्रकार हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र सामाजिक, सांस्कृतिक सामान्य स्वरूपों और अनेक प्रकार के अन्तः सम्बन्धों का सामान्य विज्ञान है। समाज में ही मनुष्य अपना विकास तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मनुष्य का धर्म, संस्कृति, भावना, रीति-रिवाज आदि समाज की देन हैं। मानव इन्हीं आधारों पर समुदाय का गठन करता है। यही कारण है कि समाजशास्त्र मानसिक सम्बन्धों के अन्तिम स्वरूपों का अध्ययन करता है जो कि मनुष्यों को एक-दूसरे के साथ बांधते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता है।

मानवीय समाज में धर्म, रीति-रिवाज, आर्थिक, राजनीतिक भावनाओं के मतभेद से आपसी झगड़े पैदा हो जाते हैं और जब ये झगड़े उग्र रूप धारण कर लेते हैं तो सम्पूर्ण समाज का जीवन अस्त व्यस्त तथा अशान्तिपूर्ण हो जाता है। आपसी झगड़ों के कारणों को खोजने एवं समाज में शान्ति स्थापना हेतु जिस विधि अथवा ज्ञान का प्रयोग होता है उसे सैन्य विज्ञान कहते हैं। सैन्य विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य लड़ाई के मूल कारणों को ढूंढना और उसका निदान करना है। यह विषय समाज को अस्त व्यस्त होने से रोकने का प्रयत्न करता है। यह मानवीय समाज का रक्षक एवं लालन पालन करने वाला है। यदि समाज साध्य है तो सैन्य विज्ञान उसका साधन। यही कारण है कि सैन्य विज्ञान मानवीय सामाजिक जीवन से अटूट सम्बन्ध रखता है। अतः सैन्य विज्ञान का अध्ययन किये बिना सामाजिक विकास का हमारा अध्ययन पूर्ण होने में असमर्थ हो सकता है।

(2) इतिहास एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

मानव जीवन की घटनाओं का क्रमबद्ध ज्ञान कराने का एकमात्र विषय इतिहास है। इतिहास मानवीय संस्कृतियों के उत्थान-पतन, उसके आर्थिक जीवन, रीति-रिवाज, कला, राजनीतिक हलचल आदि की कहानी है। यदि देखा जाये तो इन सबके पीछे लड़ाई का हाथ होता है। पुरानी सभ्यताओं और संस्कृतियों का विनाश तथा नवीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का प्रादुर्भाव हुआ है।

आधुनिक सैन्य विज्ञान का स्वरूप अतीत की सैनिक क्रियाओं, संगठनों, शैलियों और प्रयोगों के परिणामों पर ही आश्रित है। सैन्य विज्ञान के छात्रों एवं छात्राओं को उक्त बातों का समुचित अध्ययन कर, भावी युद्ध योजना एवं सिद्धान्त का निर्माण करना होगा। इस कार्य के लिए इतिहास ही सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि इतिहास मानव समाज की सामूहिक घटनाओं का संग्रह है। इस प्रकार हम कह. सकते हैं कि विज्ञान के भावी एवं आधुनिक स्वरूप का जनक इतिहास ही है। **जनरल जे.एफ.सी. फुलर** के शब्दों में "सम्पूर्ण इतिहास अथवा किसी विशेष समय के इतिहास को देखने पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह प्राप्त होती है कि घटनायें शान्ति एवं युद्ध के दोहरे कथानक से बुनी जाती हैं।"

(3) मनोविज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो वातावरण के प्रति प्राणी के अभियोजनों (Adjustments) का अध्ययन करता है। प्रत्येक प्राणी का प्रधान लक्ष्य है जीवित रहना। जीवन की मूल प्रकृति में ही क्रिया, परिवर्तन और अभियोजन सन्निहित रहते हैं। अतएव मानव-स्वभाव कोई स्थिर सत्व (static entity) नहीं वरन् कुछ करते रहने का ही गत्यात्मक (Dynamic) रूप है। इसीलिये मनोवैज्ञानिकों ने मानव स्वभाव की व्याख्या करते हुए कहा है कि—"मानव-स्वभाव जो कुछ करता है, वही मानव स्वभाव है।"

संक्षेप में, हम यों भी कह सकते हैं कि मनोविज्ञान मानव के कार्य, चाल-चलन, व्यवहार, स्वभाव के मानसिक पहलू का अध्ययन करता है। मनुष्य की विचार शक्ति किस तरह से

Scanned by CamScanner